

## पद ८९

(रागः पूर्वी - तालः त्रिताल)

नाहीं स्वरूपीं मी ब्रह्म हा ताठा। वृत्तीच्या लाटा। जाशी घेण्या  
अनुभव या वाटा। तरि उरेल कांटा। स्फूर्ति स्फुरण स्फोरकता  
गाळुनि। निर्विकल्प स्वस्वरूप गांठा ॥१॥ भागा त्यागुनी जरी  
चिदंश घेसी, मी ब्रह्म म्हणसी। घेतां अनुभव तूं आणिक होसी  
स्वस्वरूप नव्हसी। ब्रह्माकारवृत्तीनें अनुभव घेसी। तरि तो अनुभव  
खोटा ॥२॥ बा रे जाणण्यांत स्वरूप आढळे जाणीवा वेगळें।  
स्वरूपीं वृत्ति ही कदापि न मिळे। स्वस्वरूप न ढळे। सहज नित्य  
स्वस्वरूप अससी। जाळिसि जनि हा अनुभव फांटा ॥३॥  
आरोपिसी मायिक या स्फुरणासी, तरी साक्षी होसी। जागा होउनि  
जरी विचार करिसी। निर्विकल्प अससी। ज्ञानरूप मार्ताण्ड प्रतापें  
वृत्ति सोडुनि वस्तुसी भेटा ॥४॥